पी ए यू ने किसानों से बेहतर पैदावार के लिए चिज़लिंग या गहरी जुताई करने का आग्रह किया

पंजाब कृषि विश्वविद्यालय (पी ए यू), लुधियाना के विशेषज्ञों ने लगातार गेहूं-धान फसल चक्र के कारण मिट्टी की ऊपरी परत में कठोर पैन (15-20 सेंटीमीटर) बनने की समस्या से निपटने के लिए किसानों को बेहतर उपज के लिए मिट्टी की चिंज़लिंग करने की सलाह दी है।

पी ए यू के कुलपति सतबीर सिंह गोसल ने बताया कि चिंज़लिंग एक गहरी जुताई की तकनीक है जो बिना पलटे मिट्टी को ढीला करती है।

यह मिट्टी की रिसाव दर को बढ़ाती है, पानी और पोषक तत्वों के बेहतर उपयोग के लिए सघन और गहरी जड़ों की वृद्धि करती है, जिससे उच्च फ़सल की पैदावार होती है। गोसल ने बताया कि गेहूं की कटाई के बाद चिंज़लिंग प्रक्रिया अपनाने के लिए समय बिल्कुल उचित है।

इस सिद्धांत को और स्पष्ट करते हुए पी ए यू के मिट्टी विज्ञान विभाग के प्रमुख प्रोफेसर धनविंदर सिंह ने खुलासा किया कि चिज़लिंग 40-45 सेंटीमीटर की गहराई तक एक विशिष्ट दूरी (गन्ने के लिए 100 से.मी. और मक्का व अन्य फ़सलों के लिए 35-40 से.मी.) की गहराई तक की जाती है।

पी ए यू में किए गए शोध के अनुसार, चिज़लिंग तकनीक से मक्का (10-100%), गेहूं (धान के बाद) (10-15%), गन्ना (15%), सूरजमुखी (10-15%), सोयाबीन (5-15%) और राया (5-15%) जैसी फ़सलों की उपज बढ़ जाती है। उन्होंने कहा कि गहरी जुताई के लाभ अधिक रेत वाली मिट्टी, सीमित सिंचित स्थितियों और गर्मी/खरीफ मौसम के दौरान अधिक देखे गए हैं।

पी ए यू के प्रधान मिट्टी भौतिक विज्ञानी मेहरबान सिंह काहलों ने सलाह दी कि अधिक से अधिक ढीली मिट्टी के लिए चिज़लिंग को सूखी भूमि में किया जाना चाहिए, और यह ध्यान रखा जाना चाहिए कि गहरी जुताई के निशान ट्रैक्टर के पहियों से दब न जाएं।

इस प्रक्रिया के आर्थिक पहलू के बारे में विस्तार से बताते हुए, उन्होंने बताया कि इसकी लागत लगभग 600-1,000 रुपये प्रति एकड़ है, जो दूरी पर निर्भर करती है, और फ़सल उत्पादकता में स्थायी लाभ के लिए इसे हर 2-3 साल में दोहराना चाहिए।